महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद्
Mahatma Gandhi National Council of Rural Education
उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

# द रुरल कनेक्ट

खंड 02 अंक 2
अगस्त 2022

***राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 'तत्वविज्ञान' है, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 'मार्ग' है- श्री धर्मेंद्र प्रधान,*** केंद्रीय शिक्षा और कौशल विकास और उद्यमिता मंत्री ने एक बैठक को संबोधित करते हुए दोहराया, जिसमें शिक्षा और कौशल विकास वर्टिकल के पूरे स्पेक्ट्रम, डिजिटल शिक्षा, नवाचार, तालमेल शिक्षा और कौशल विकास, शिक्षक प्रशिक्षण और मूल्यांकन जैसे क्षेत्र को शामिल

करते हुए पहल शुरू की गई थी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि एन.सी.एफ. जनादेश दस्तावेज बच्चों के समग्र विकास, कौशल पर जोर, शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका, मातृभाषा में सीखने और सांस्कृतिक जड़ता पर ध्यान देने के अलावा एक आदर्श बदलाव लाने जा रहा है। यह भारतीय शिक्षा प्रणाली के विघटन की दिशा में भी एक कदम है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एक वैज्ञानिक और सतत प्रक्रिया है और एन.सी.एफ. एक समाज का दस्तावेज है।

## *कौशल शक्ति है*

## एम.जी.एन.सी.आर.ई. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचे में योगदान देता है – 5 से 20 अगस्त 2022 तक निर्धारित अनुभवात्मक शिक्षा, कौशल और व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से शिक्षक शिक्षा में पाठ्यचर्या सुधार पर पांच 2-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशालाएं!

***शिक्षक शिक्षा में पाठ्यचर्या सुधारों को लागू करने के लिए क्षेत्रीय टास्क फोर्स के निर्माण पर ध्यान दें***

| क्र.सं. | स्थान | वेन्यू | दिनांक |
|---|---|---|---|
| 1. | नई दिल्ली | राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी. | 05 और 06 अगस्त |
| 2. | मैसूर | क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान | 10 और 11 अगस्त |
| 3. | भुवनेश्वर | क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान | 17 और 18 अगस्त |
| 4. | भोपाल | क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान | 24 और 25 अगस्त |
| 5. | शिलांग | उत्तर पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान | 29 और 30 अगस्त |

*विश्वविद्यालय बोर्ड ऑफ स्टडीज के लिए शिक्षक शिक्षा विभाग के सदस्य; शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों से वरिष्ठ संकाय; और डायट से प्रधानाचार्य / वरिष्ठ संकाय।*

*- मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एग्जिट मॉडल के संदर्भ में डी.एड., बी.एड. और एम.एड. पाठ्यक्रम में विस्तार, मानकीकरण और सुधार के लिए रणनीतियों पर विचार-विमर्श करने के लिए संस्थानों, शिक्षाविदों, पेशेवरों और अन्य प्रमुख हितधारकों को एक साथ लाने के लिए*

---

## शैक्षणिक पाठ्यचर्या हस्तक्षेप के माध्यम से एक सतत ग्रामीण भारत के लिए जड़ें

**- सामाजिक विभाग के विभाग प्रमुखों और संकाय के लिए एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण व्यस्तता पर पांच 2-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशालाएं आयोजित की गईं**

### उच्चतर शिक्षा संस्थानों का कार्य और प्रबंधन

- महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, यू.जी.सी. एच.आर.डी.सी. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे.एन.यू.) नई दिल्ली, अमृता विश्व विद्यापीठम कोयंबटूर, और उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद में ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण व्यस्तता पर राष्ट्रीय कार्यशालाएं आयोजित की गईं। यू.जी.सी. एच.आर.डी.सी. गुवाहाटी विश्वविद्यालय गुवाहाटी असम में राष्ट्रीय कार्यशाला 1 और 2 अगस्त के लिए निर्धारित है।

*राष्ट्रीय कार्यशालाओं का एजेंडा - एन.ई.पी. 2020 द्वारा प्रस्तावित मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एक्जिट मॉडल के संदर्भ में सामाजिक कार्य और प्रबंधन पाठ्यक्रम का एकीकरण / समावेशन, जिसमें 1 वर्ष का सर्टिफिकेट प्रोग्राम, 2 वर्ष का डिप्लोमा प्रोग्राम और 3 वर्ष का डिग्री प्रोग्राम शामिल है।*

# संपादक की टिप्पणी

व्यापक सीखने और ज्ञान साझा करने का एक महीना! एम.जी.एन.सी.आर.ई. का मानना है कि समुदाय की जरूरतें, अनुसंधान, शिक्षण-शिक्षण कार्यक्रम सामग्री और कार्यप्रणाली, पाठ्यक्रम, छात्रों के करियर, संकाय के करियर और संकाय विकास एकीकृत हैं। हमारे सभी कार्य, परियोजनाएं और कार्यक्रम ऐसा करने का प्रयास करते हैं। शिक्षण, अनुसंधान और संकाय विकास के संबंध स्थापित करने के अपने प्रयास में, एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने उच्चतर शिक्षा संस्थानों के पाठ्यक्रम में ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण व्यस्तता के एकीकरण / समावेश के लिए 14 जुलाई से 30 जुलाई तक ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण व्यस्तता पर सामाजिक कार्य और उच्चतर शिक्षा संस्थानों के प्रबंधन के संकाय के लिए चार राष्ट्रीय कार्यशालाएँ आयोजित कीं।

अगस्त में छह और राष्ट्रीय कार्यशालाएँ आने वाली हैं जिनमें व्यावसायिक शिक्षा, अनुभवात्मक शिक्षा और कौशल शामिल हैं। 2-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशालाओं का उद्देश्य शिक्षक शिक्षा में डी.एड., बी.एड. और एम.एड. पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रस्तावित मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एग्जिट मॉडल के संदर्भ में 1 वर्ष का सर्टिफिकेट प्रोग्राम, 2 वर्ष का डिप्लोमा प्रोग्राम शामिल करना है, 3 वर्ष का डिग्री प्रोग्राम, 4 वर्ष का ऑनर्स प्रोग्राम और 1 वर्ष का एम.बी.ए. प्रोग्राम, व्यावसायिक शिक्षा और कौशल में संकाय विकास और लघु/प्रमुख अनुसंधान परियोजनाओं पर चर्चा की जाएगी।

शैक्षणिक नेतृत्व पर दो संकाय विकास कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। एफ.डी.पी. के उद्देश्य शैक्षणिक नेतृत्व के उपकरणों और तकनीकों के साथ संकाय को कुशल बनाना था, जिससे कैरियर में उनके विकास में योगदान दिया गया; संकाय में शैक्षणिक अनुशासन स्थापित करना; उच्चतर आई,क्यू. स्तरों की आवश्यकता वाली परिस्थितियों से निपटने के लिए संकाय को सलाह देना; उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने के लिए संकाय को उन्मुख करना; और उपयुक्त अनुसंधान पद्धति और समकालीन अनुसंधान उपकरणों और तकनीकों के साथ अनुभवात्मक शिक्षा के साथ संकाय का मार्गदर्शन करना। परिणाम अत्यंत फलदायी रहा क्योंकि भाग लेने वाले कॉलेजों के प्राचार्यों ने अपने संबंधित कॉलेजों को समय-सीमा के साथ की जाने वाली गतिविधियों के बारे में कार्यवाही के साथ आदेश पारित किए हैं; अपने संस्थानों में सामाजिक उद्यमिता, स्वच्छता और ग्रामीण व्यस्तता प्रकोष्ठों का गठन किया है; और ग्रीन ऑडिट के आदेश दिए।

राष्ट्रीय कार्यशालाओं ने एन.ई.पी. 2020 द्वारा प्रस्तावित मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एक्जिट मॉडल के संदर्भ में सामाजिक कार्य और प्रबंधन पाठ्यक्रम पर विचार-विमर्श देखा, जिसमें 1 वर्ष का सर्टिफिकेट प्रोग्राम, 2 वर्ष का डिप्लोमा प्रोग्राम और 3 वर्ष का डिग्री प्रोग्राम शामिल था। मैं मेजबान विश्वविद्यालयों, उस्मानिया विश्वविद्यालय, अमृता विश्व विद्यापीठम, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय और गुवाहाटी विश्वविद्यालय (आगामी) को धन्यवाद देता हूं। परिणाम उत्साहजनक था क्योंकि प्रतिभागियों ने प्रमाणपत्र, डिप्लोमा और डिग्री पाठ्यक्रमों को अनुकूलित करने वाले सामाजिक कार्य और प्रबंधन पाठ्यक्रम के समावेश, एकीकरण और संशोधन पर संपूर्ण व्यक्तिगत और सहयोगात्मक कार्य शुरू किया, जो रोजगार में मदद करेगा।

राष्ट्रीय कार्यशालाओं के लक्ष्य समुदाय को महसूस की गई और बताई गई जरूरतों को पूरा करना था, न कि बताई गई और अव्यक्त जरूरतों को, जिसे सामाजिक कार्य / प्रबंधन शिक्षित छात्र द्वारा 1-वर्षीय प्रमाणपत्र स्तर, 2-वर्षीय डिप्लोमा स्तर और 3-वर्षीय डिग्री स्तर पर संबोधित किया जा सकता था। प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम के उद्देश्यों, सीखने के परिणामों, सामग्री, शिक्षण, शिक्षण पद्धति, सीखने के अनुभवों और मूल्यांकन पद्धति पर काम किया।

ऐसा लगता है कि मनुष्य पहले कौशल सीखता है, फिर दृष्टिकोण विकसित करता है और अंत में कौशल के पीछे ज्ञान प्राप्त करता है। ऐसा नहीं लगता है कि यह एकरेखीय है लेकिन चक्रीय प्रतीत होता है, चक्र के सरल से अधिक जटिल स्तरों तक विकसित हो रहा है। उच्चतर शिक्षा में मल्टीपल एंट्री मल्टीपल एक्जिट बनाने का प्रयास उस दिशा में प्रतीत होता है, जो अभ्यास के साथ सिद्धांत के एकीकरण में मदद करता है। छात्र को कार्यक्रमों के वेस्टिबुल को जारी रखने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि विभिन्न स्तरों पर बाहर निकलने और फिर से प्रवेश करने का विकल्प होना चाहिए।

उच्चतर स्तर की शिक्षा प्राप्त करने वालों को अधिक जटिल चुनौतियों और बड़ी आय की तलाश में अधिक जटिल स्थानों पर जाने के लिए सेंट्रिपेटल बलों द्वारा प्रभावित किया जाता है, जो कि छोटे स्थान पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं के कारण भुगतान नहीं कर सकते हैं।

**डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार**
**अध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई.**

जैसा कि हम देश भर में समय की आवश्यकता के लिए राष्ट्रीय कार्यशालाओं का आयोजन कर रहे हैं, यह वास्तव में खुशी की बात है कि परिणाम बेहद उत्साहजनक रहे हैं। उच्चतर शिक्षा में देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए, शिक्षा मंत्रालय एन.ई.पी. 2020 के कार्यान्वयन के लिए सभी हितधारकों के साथ सख्ती से प्रयास कर रहा है, जिसमें स्थानीय/भारतीय भाषाओं में शिक्षा का माध्यम या कार्यक्रम प्रदान करना शामिल है। एच.ई.आई. अधिक से अधिक उद्योग-शैक्षणिक संबंधों के साथ स्टार्ट-अप ऊष्मायन केंद्र, प्रौद्योगिकी विकास केंद्र आदि स्थापित करके अनुसंधान और नवाचार पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. इंटर्न देश भर में उच्चतर शिक्षा संस्थानों के साथ बातचीत कर रहे हैं और स्थिरता प्रथाओं को बढ़ावा दे रहे हैं। एच.ई.आई. ने कौशल, रोजगार क्षमता और उद्यमिता विकसित करने के लिए इंटर्नशिप / अप्रेंटिसशिप एंबेडेड डिग्री प्रोग्राम शुरू किए हैं। शैक्षिक संस्थानों में इनक्यूबेशन सेंटर उद्यमियों को प्रतिस्पर्धी बाजार में जीवित रहने में मदद करने के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करके अपने स्टार्ट-अप चरण के माध्यम से प्रौद्योगिकी और ज्ञान आधारित उद्यमों का पोषण करना चाहते हैं और एक ऐसे चरण तक पहुंचते हैं जहां वे अपने उद्यमों को और बढ़ा सकते हैं। "स्किल इंडिया मिशन (सिम)", "स्किल हब इनिशिएटिव" उद्योग की जरूरतों के अनुसार कुशल कार्यबल बनाने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर स्कूली बच्चों सहित लाखों लोगों के कौशल स्तर को बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा शुरू की गई योजनाएं हैं। योजना के तहत रोजगार कौशल मॉड्यूल को व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का अनिवार्य हिस्सा बनाया गया है। सामुदायिक व्यस्तता पद्धति के साथ ग्रामीण प्रबंधन शिक्षा ग्रामीण समुदायों के लिए एक बड़े गेम चेंजर के रूप में तैनात है। जो आवश्यक है वह एक ऐसा दृष्टिकोण है जो सेवा से परे और वास्तविक 'व्यस्तता' तक पहुंच जाता है।

**डॉ भरत पाठक**
**उपाध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई.**

***नई तालीम का काम कोई पेशा सिखाना नहीं है, बल्कि उसके जरिए पूरे आदमी का विकास करना है. शिक्षा से मेरा तात्पर्य बच्चे और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा में सर्वोत्तम का सर्वांगीण चित्रण करना है। - महात्मा गांधी***

## राष्ट्रीय कार्यशालाएं गति में

पहले दिन, प्रतिभागियों ने प्रमाण पत्र, डिप्लोमा और डिग्री स्तरों पर ग्रामीण सामाजिक कार्य और ग्रामीण प्रबंधन के छात्रों के लिए उद्यमिता और रोजगार के अवसरों पर कार्यशाला मोड में काम किया; और मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एग्जिट मॉडल के संदर्भ में बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन और बी.एस.डब्ल्यू. करिकुलम को रीकास्ट करना। दूसरे दिन, ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण व्यस्तता में संकाय विकास और लघु/प्रमुख अनुसंधान परियोजनाओं पर प्रस्तुतियों के साथ सत्र आयोजित किए गए; और मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एग्जिट मॉडल के संदर्भ में बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन और बी.एस.डब्ल्यू. करिकुलम पर प्रेजेंटेशन।

# राष्ट्रीय कार्यशालाएं

## *ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण व्यस्तता - विभिन्न स्तरों पर सामाजिक कार्य और ग्रामीण प्रबंधन शिक्षा में विस्तार, मानकीकरण और सुधार के लिए रणनीतियाँ*

*"राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी. 2020) और उच्चतर शिक्षा में इसकी बहु प्रवेश/निकास प्रणाली (एम.ई.ई.एस.) आर्थिक और सामाजिक रूप से वंचित छात्रों के लिए बहुत लाभकारी है" - श्री धर्मेंद्र प्रधान, केंद्रीय शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्री।*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020, अन्य बातों के अलावा, छात्रों को अध्ययन के लिए विषयों की पसंद और शैक्षणिक रास्ते के मामले में लचीलापन प्रदान करके उच्चतर शिक्षा प्रणाली में सुधार करना चाहता है। कई प्रवेश और निकास बिंदुओं के साथ अध्ययन के लिए विषयों का एक रचनात्मक संयोजन एन.ई.पी., 2020 की एक बहुत ही महत्वपूर्ण सिफारिश है। उच्चतर शिक्षा संस्थानों (एच.ई.आई.) में पेश किए जाने वाले शैक्षणिक कार्यक्रमों में कई प्रवेश और निकास बिंदु कठोर सीमाओं को हटा देंगे और नई संभावनाएं पैदा करेंगे। छात्रों को अपनी पसंद के विषय चुनने और सीखने के लिए।

शिक्षण, अनुसंधान और संकाय विकास के संबंध स्थापित करते हुए, एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण व्यस्तता पर राष्ट्रीय कार्यशालाएँ आयोजित कीं। राष्ट्रीय कार्यशालाओं में बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन / बी.एस.डब्ल्यू. सामुदायिक विकास पाठ्यक्रम को मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल के संदर्भ में शामिल करते हुए उच्चतर शिक्षा संस्थानों के सामाजिक कार्य और प्रबंधन के लिए उच्चतर शिक्षा संस्थानों के पाठ्यक्रम में ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण व्यस्तता के एकीकरण / समावेश पर ध्यान केंद्रित किया गया। एन.ई.पी. 2020 द्वारा प्रस्तावित एग्जिट मॉडल जिसमें 1 वर्ष का सर्टिफिकेट प्रोग्राम, 2 वर्ष का डिप्लोमा प्रोग्राम और 3 वर्ष का डिग्री प्रोग्राम शामिल है।

यह देश भर के पेशेवरों के लिए सामाजिक कार्य और ग्रामीण प्रबंधन पूल को व्यापक रूप से समन्वित और विस्तारित करने का समय है। समावेशी विकास के लिए बाधाओं से ऊपर उठने और ग्रामीण संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन करने की तत्काल आवश्यकता है।

### उद्देश्य

- उच्चतर शिक्षा संस्थानों को शामिल करते हुए शैक्षणिक पाठ्यक्रम हस्तक्षेप के माध्यम से एक आत्मनिर्भर और सतत ग्रामीण भारत बनाने के लक्ष्य को आगे बढ़ाने के लिए।
- विभिन्न स्तरों पर ग्रामीण प्रबंधन शिक्षा में विस्तार, मानकीकरण और सुधार के लिए रणनीतियों पर विचार-विमर्श करने के लिए संस्थानों, शिक्षाविदों, पेशेवरों और अन्य प्रमुख हितधारकों को एक साथ लाना।
- ग्रामीण पृष्ठभूमि के छात्रों को सशक्त बनाना, जिन्हें प्रतिस्पर्धी दुनिया में प्रतिस्पर्धा करना मुश्किल हो रहा है
- ग्रामीण प्रबंधन के बारे में अधिक प्रभावी संचार और जागरूकता लाने के लिए
- सामाजिक कार्य/ग्रामीण प्रबंधन के क्षेत्र में चुनौतियों का समाधान करने के लिए अभ्यास ज्ञान का एक निकाय बनाना शिक्षा

---

2 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया और विस्तृत सत्रों की एक श्रृंखला के साथ शुरू हुआ। प्रतिभागियों को दो अलग-अलग समूहों में बांटा गया था - सामाजिक कार्य और ग्रामीण प्रबंधन। प्रतिभागियों को अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा क्षेत्र की आवश्यकताओं, कौशल की आवश्यकता, शिक्षण तकनीक, पाठ्यक्रम / सामग्री, लेन-देन के तरीके और मूल्यांकन प्रक्रियाओं पर अपने विचारों को प्रस्तुत करने के लिए जानकारी दी गई। विचार-मंथन सत्रों में, प्रतिभागियों को शामिल विषयों के लिए सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और डिग्री पाठ्यक्रमों के लिए अपने विचार लिखने के लिए निर्देशित किया गया था। बाद में, निष्कर्ष निकालने के लिए इनपुट को एकत्रित किया गया। प्रतिभागियों ने सामूहिक प्रस्तुति के रूप में अपने विचार प्रस्तुत किए।

*ग्रामीण क्षेत्रों में हम और क्या कर सकते हैं, यह बताने के लिए एम.जी.एन.सी.आर.ई. का धन्यवाद। यह वास्तव में एक समृद्ध और सूचनात्मक सीखने का अनुभव था। हम सभी आने वाले समय में और अधिक सीखने के प्रयासों की आशा करते हैं। मार्गदर्शन और सहयोग सराहनीय है। डॉ रुचि गोस्वामी*

प्रतिभागियों में सामाजिक कार्य और प्रबंधन के विभागों के शिक्षकों का एक उदार मिश्रण था, जिन्होंने उत्साहपूर्वक अपने इनपुट को आवाज दी और पाठ्यक्रम के पुनर्रचना में योगदान दिया। सामाजिक कार्य और ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम के लिए प्रमाण पत्र, डिप्लोमा और डिग्री स्तरों पर इनपुट अलग से लिए गए थे।

### *विभिन्न स्तरों पर एक कुशल, नौकरी के लिए तैयार जनशक्ति का विकास करना .....*

नेतृत्व **डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार, अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. और डॉ वेंकट पुल्ला**, भारतीय मूल के ऑस्ट्रेलियाई मानव सेवा प्रबंधन सलाहकार और प्रेरक वक्ता, इम्पेटस ग्लोबल कंसल्टिंग एंड फाउंडेशन के प्रिंसिपल द्वारा किया गया। ब्रिस्बेन इंस्टीट्यूट ऑफ स्ट्रेंथ-आधारित अभ्यास के प्रोफेसर - राष्ट्रीय कार्यशालाओं में प्रख्यात शिक्षाविदों ने भाग लिया।

**जीवित रहें, कामयाब होना, फलें-फूलें।** मुख्य वक्ता डॉ. वेंकट पुल्ला ने इन शब्दों को जीवन के लंगर के रूप में उद्धृत किया। उन्होंने बोर्ड ऑफ स्टडीज (बी.ओ.एस.) के सदस्यों और फैकल्टी को सुझाव दिया कि जो नहीं है उसकी तलाश करने के बजाय उस पर काम करें जो वहां है। एम्प्लॉयमेंट मार्केट इंटेलिजेंस (ई.एम.आई.) और लेबर एम्प्लॉयमेंट ट्रेनिंग (एल.ई.टी.) बी.ओ.एस. सदस्यों को पाठ्यक्रम को अपडेट करने में मदद करेंगे। कई निकास और प्रवेश विकल्पों के मामले में बी.ओ.एस. सदस्यों को छात्रों की

प्राथमिकताओं की पहचान करनी चाहिए और उन्हें शिक्षा के मूल्यों को समझना चाहिए। उन्होंने सदस्यों से बौद्धिक कौशल पर ध्यान केंद्रित करने, स्थिति को समझने, शिक्षकों और छात्रों को प्रेरित करने और उन्हें जीवन में मूल्यों को समझने और उन्हें प्रेरित करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम से बाहर निकलना भी प्रवेश की तरह ही जश्न का होना चाहिए। अच्छे छात्र हर जगह होते हैं और उन्हें पहचानने की जिम्मेदारी शिक्षकों की होती है। यदि कोई व्यक्ति समस्याओं को अधिक समय तक रखता है, तो यह भारी हो जाता है और इसलिए इसे हल्का होने के लिए जितनी जल्दी हो सके छोड़ देना चाहिए।

डॉ. वेंकट पुल्ला ने **कौशल, दृष्टिकोण और ज्ञान** पर जोर देते हुए विश्वविद्यालयों के एकीकरण पर जोर दिया। उन्होंने संकाय को शामिल करके पाठ्यक्रम विकास के महत्व को जोरदार ढंग से बताया जो छात्र-केंद्रित पाठ्यक्रम और विषय विकास की ओर ले जाता है। उन्होंने पाठ्यचर्या के टुकड़े करने, पाठ्यचर्या की गणना और संबंधित पहलुओं में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि दी। जैसा कि भारत दुनिया में सबसे बड़ी आबादी बनने के लिए तैयार है, बढ़ते शहरीकरण और आय का स्तर उच्चतर शिक्षा की मांग को और बढ़ा देगा। ग्रामीण समाज की जरूरतों को पूरा करने के लिए हमें पाठ्यक्रम से संबंधित मुद्दों को अव्यवस्थित करने और ठीक करने और ग्रामीण प्रबंधन के लिए आवश्यक 21 वीं सदी की दक्षताओं के आधार पर प्रासंगिकता की जांच करने की आवश्यकता है।

भारत का शैक्षिक दृष्टिकोण 2030 कई व्यवसायों को प्रभावित करता है जिसमें सामाजिक कार्य, ग्रामीण विकास और व्यवसाय प्रबंधन शामिल हैं। सामाजिक कार्य मानव सेवा ज्यादातर सेवा क्षेत्र में फिट बैठता है। इसे नए और उभरते हुए नए रास्ते और अवसरों को फिर से तैयार करने की जरूरत है। विभिन्न स्तरों पर एक कुशल, नौकरी के लिए तैयार जनशक्ति का विकास करना, शिक्षा / कौशल प्रदान करना जो छात्रों को उद्यमी बनने में सक्षम बनाता है, उच्चतर शिक्षा स्नातकों को वैश्विक कौशल के साथ सक्षम बनाता है, जिन्हें दुनिया भर में कार्यबल द्वारा नियोजित किया जा सकता है, जिला और ब्लॉक स्तर पर भूमिकाओं का निर्माण जो उपयोग कर सकते हैं सॉफ्ट स्किल्स सामाजिक कार्य शिक्षा के लिए आर्थिक दृष्टिकोण से अनिवार्यता के रूप में कार्य करते हैं" डॉ. वेंकट पुल्ला ने कहा।

### *अनुसंधान प्रस्तावों को समुदाय-केंद्रित होने की आवश्यकता है...*

एम.जी.एन.सी.आर.ई. के अध्यक्ष डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार ने प्रतिभागियों को उनके समग्र विकास के लिए एम.जी.एन.सी.आर.ई. के तहत अनुसंधान परियोजनाओं के लिए आवेदन करने के तरीके के बारे में जानकारी दी। उन्होंने ऐसे प्रस्तावों के साथ आने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला जो समुदाय केंद्रित हैं और जो समग्र रूप से समाज के विकास की ओर ले जा सकते हैं। उन्होंने उल्लेख किया कि एम.जी.एन.सी.आर.ई. पाठ्य पुस्तकों, वीडियो मामलों और वीडियो पाठों के रूप में सही प्रकार के काम के लिए धन देने के लिए तैयार है, बशर्ते कि वे अपने काम की गुणवत्ता बनाए रखें और जिसका सरकार के नीति निर्माण पर लंबे समय तक शोध के निष्कर्ष प्रभाव पड़ता है।

पाठ्यक्रम की एक संरचना बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है जो पहले वर्ष में 70% व्यावहारिक कौशल आधारित और 30% कक्षा बातचीत आधारित है; 50% व्यावहारिक कौशल आधारित और 50% सिद्धांत या कक्षा की बातचीत दूसरे वर्ष में आधारित; और तीसरे वर्ष में 30% प्रैक्टिकल स्किल आधारित और 70% सिद्धांत या कक्षा की बातचीत। एम.जी.एन.सी.आर.ई. एक उद्यमिता उन्मुख शैक्षणिक प्रणाली के लिए प्रतिज्ञा करता है जो छात्रों को स्वरोजगार करेगा और ग्रामीण विकास में भी योगदान देगा। मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एग्जिट मॉडल की ताकत कई गुना है।

यह शिक्षाविदों के लिए एक साथ आने और पाठ्यचर्या सुधारों के लिए काम करने का एक उपयुक्त क्षण है जो भारत को मूल स्तर से फिर से जीवंत करेगा। छात्रों के लिए ऐसे स्तरों पर खुद को रोजगार योग्य बनाने के लिए, शिक्षाविदों का यह अनिवार्य कर्तव्य है कि वे सामाजिक कार्य और ग्रामीण प्रबंधन पहलुओं को पाठ्यक्रम में शामिल करें जिसके द्वारा वह खुद को सामाजिक और प्रबंधकीय पहलुओं से चरणबद्ध तरीके से परिचित करा सकें। छात्रों को गांवों में काम करने के लिए तैयार करने के लिए पाठ्यचर्या सुधार महत्वपूर्ण हैं। छात्रों में भावनात्मक और व्यावहारिक भागफल को इस तरह से सम्मानित करने की आवश्यकता है कि वे ग्रामीण कल्याण के लिए प्रबंधकीय और व्यावसायिक गतिशीलता से प्रेरित हों।

उच्चतर शिक्षा संस्थानों में पेश किए जाने वाले शैक्षणिक कार्यक्रमों में बहु प्रवेश और निकास बिंदु कठोर सीमाओं को हटा देंगे और छात्रों के लिए अपनी पसंद के विषय को चुनने और सीखने की नई संभावनाएं पैदा करेंगे। इसके अलावा, यह क्रेडिट मान्यता, क्रेडिट संचय, क्रेडिट ट्रांसफर और क्रेडिट रिडेम्पशन की औपचारिक प्रणाली के माध्यम से डिग्री देने वाले एच.ई.आई. के बीच या भीतर निर्बाध छात्र गतिशीलता का मार्ग प्रशस्त करेगा। भारत की लगभग 70% आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। सामाजिक कार्य और ग्रामीण प्रबंधन के पहलुओं को प्रदान करने से छात्रों का एक गतिशील पूल तैयार होगा जो ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता पर स्थायी प्रभाव डाल सकता है। सामाजिक कार्य और ग्रामीण प्रबंधन पहलुओं के साथ मजबूत पाठ्यक्रम ग्रामीण श्रम शक्ति की उत्पादकता में वृद्धि करेगा और नेतृत्व विभागों का विकास करेगा।

सही प्रकार की शिक्षा के साथ, व्यक्ति आत्मविश्वास, ज्ञान, कौशल और अनुभव प्राप्त करते हैं - वे सभी कारक जो किसी व्यक्ति की क्षमता को प्रभावी ढंग से और कुशलता से लोगों के समूह का नेतृत्व करने और सफल होने की क्षमता को बढ़ाते हैं। ***पुन: डिज़ाइन किए गए पाठ्यक्रम को पहले वर्ष में छात्रों को आश्वस्त करना चाहिए ताकि वे सामाजिक नेता बन सकें और देश के ग्रामीण क्षेत्रों में काम कर सकें।***

---

## महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
## (एम.जी.ए.एच.वी.) 29-30 जुलाई

*"भारत भर के संस्थानों के साथ तालमेल और समन्वय की आकांक्षाओं को पूरा करता है छात्रों और उच्चतर शिक्षा संस्थानों को राष्ट्र निर्माण में सकारात्मक सक्रिय भूमिका निभाने में मदद करता है" प्रो. **हनुमान प्रसाद शुक्ला, प्रो वाइस चांसलर एम.जी.ए.एच.वी.** ने कहा। उन्होंने गांधीवादी तत्त्वविज्ञान के प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को दोहराया और महात्मा गांधी के दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए एक जीवंत अनुभव की आवश्यकता पर बल दिया। "प्राचीन भारत के गांवों को देखते हुए, एन.ई.पी. 2020 भी एक आत्मनिर्भर भारत की कल्पना करता है और ग्रामीण प्रबंधन और सामाजिक कार्य पाठ्यक्रम के एकीकरण पर यह राष्ट्रीय कार्यशाला इस लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक कदम है। प्राचीन काल के दौरान, सुशासन में भी स्थिरता देखी जाती थी जो हमारे अपने मूल्यों, मुद्रा, उपज के इष्टतम उपयोग और प्रभावी व्यापार प्रथाओं के माध्यम से लागू की गई थी। ज्ञान, कर्म और भक्ति के अलावा, क्रिया विधि भी स्थिरता प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।"*

एम.जी.ए.एच.वी. वर्धा द्वारा आयोजित ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण व्यस्तता पर राष्ट्रीय कार्यशाला में **प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ला, प्रो वाइस चांसलर, प्रो. मनोज कुमार प्रोफेसर और डीन - स्कूल ऑफ लॉ** ने भाग लिया। अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. और डॉ. वेंकट पुल्ला ने कार्यवाही का नेतृत्व किया और कार्यशाला के परिणामों का समन्वय किया।

**प्रो. रजनीश कुमार शुक्ला, कुलपति** एम.जी.ए.एच.वी. वर्धा ने अपने विश्वविद्यालय परिसर में ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण व्यस्तता पर 2-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित करने पर प्रसन्नता व्यक्त की और एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा इस कार्यक्रम के आयोजन में समर्थन देने के लिए वर्धा सामाजिक कार्य संस्थान, एम.जी.ए.एच.वी. कैंपस टीम को बधाई दी। उन्होंने प्रतिभागियों से शहरी विकास मॉडल के समान ग्रामीण विकास के लिए समान विकास मॉडल पर ध्यान केंद्रित करने का भी आग्रह किया। उन्होंने प्राचीन संस्कृति, परंपरा, ग्रामीण समाज के मूल्यों के महत्व को याद किया यहां तक कि कोविड महामारी जैसी स्थितियों में भी जो देश के सामने आने वाली चुनौतियों का सामना करने में मदद करते हैं। ज्ञान और कौशल के बिना प्रमाण पत्र प्राप्त करना बेकार है और उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालयों को छात्रों के बीच चरित्र, नवाचार और दक्षता के निर्माण के लिए लगातार काम करना चाहिए। उन्होंने दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लेने वाले शिक्षकों को प्रतिभागिता प्रमाण पत्र भी प्रदान किया।

एन.ई.पी. 2020 के एम.ई.एम.ई. मॉडल के अनुसार ग्रामीण प्रबंधन और सामाजिक कार्य पाठ्यक्रम के एकीकरण पर विचार विकसित करने के लिए महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, गुजरात और तमिलनाडु के प्रतिभागियों को उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्र के आधार पर समूहों में विभाजित किया गया था।

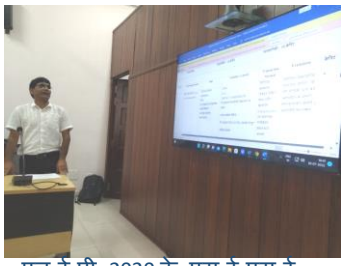

एन.ई.पी. 2020 के एम.ई.एम.ई. मॉडल के अनुसार ग्रामीण प्रबंधन और सामाजिक कार्य पाठ्यक्रम के एकीकरण पर समूह चर्चा

## ग्रामीण विकास के लिए प्रबंधन जरूरी - प्रो.शुक्ल

**नागपुर/वर्धा।** महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण भागीदारी विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए,प्रतिकुलपति प्रो.हनुमानप्रसाद शुक्ल ने कहा कि भारतीय गावों की वास्तविक परिस्थिति और नागरिकों के मन को समझकर उसके प्रबंधन की आवश्यकता है। कार्यशाला का उद्घाटन कस्तूरबा सभागार में किया गया। इस अवसर पर महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद, हैदराबाद के अध्यक्ष डॉ.डब्ल्यू. जी. प्रसन्ना, ब्रीसबेन इन्स्टीट्यूट ऑफ स्ट्रेंथ बैस प्रैक्टिस के फाउंडर प्रोफेसर डॉ.वेंकट पोल्ला एवं

महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो.मनोज कुमार मंचासीन थे। डॉ.वेंकट पोल्ला ने ग्रामीण प्रबंधन को समय की जरुरत बताते हुए कहा कि समाज कार्य के पाठ्यक्रम में क्षमता विकास आवश्यक विषय वस्तु होनी चाहिए। उन्होंने ग्रामीण विकास, शिक्षा और कौशल विकास के लिए पाठ्यक्रमों में आवश्यक सुधार करने की बात कही। डॉ.डब्ल्यू. जी. प्रसन्ना ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का संदर्भ देते हुए कहा कि विद्यार्थियों को कर्म, भक्ति और ज्ञान में सक्षम बनाना चाहिए। छात्रों को बाहर की दुनिया का सामना करने और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में तैयार करना चाहिए। कार्यशाला में विभिन्न राज्यों से 25 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए। कार्यक्रम का प्रारंभ दीपप्रज्वलन एवं कुलगीत से किया गया। स्वागत वक्तव्य प्रो.मनोज कुमार ने दिया। कार्यक्रम का संचालन सहायक प्रोफेसर डॉ.शिव सिंह बघेल ने किया तथा आभार सहायक प्रोफेसर डॉ.मिथिलेश कुमार ने ज्ञापित किया। इस अवसर पर प्रतिकुलपति प्रोफेसर चंद्रकांत रागीट सहित अधिष्ठातागण, विभागाध्यक्ष, अध्यापक, प्रतिभागी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

## जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे.एन.यू.) 27-28 जुलाई

अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्देश्यों की शुरुआत की और एन.ई.पी. और मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एक्जिट मॉडल के बारे में बात की। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि ग्रामीण कार्य और ग्रामीण प्रबंधन के पाठ्यक्रम ऐसे विद्वान छात्र पैदा कर रहे हैं जिनके पास ग्रामीण क्षेत्र में काम करने के लिए कौशल की कमी है। उन्होंने कहा कि भारत में अधिकांश नौकरियां ग्रामीण क्षेत्र में हैं और इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षा क्षेत्र में आवश्यक कौशल और ज्ञान वाले छात्रों को तैयार किया जाए जो कई स्तरों पर बाहर निकल सकें और ग्रामीण उद्योग के लिए तैयार हों। मुख्य भाषण डॉ. वेंकट पुल्ला ने दिया। उन्होंने पाठ्यचर्या की स्लाइसिंग, पाठ्यचर्या की गणना और इसके विभिन्न पहलुओं में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि दी।

मुख्य अतिथि, डॉ. दीप नारायण पांडे, सहायक प्रोफेसर, आपदा अनुसंधान के लिए विशेष केंद्र, जे.एन.यू. ने दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन में भाग लिया।

प्रतिभागियों को एन.ई.पी. 2020 मल्टीपल एंट्री और मल्टीपल एग्जिट मॉडल के आलोक में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और डिग्री लेवल पर सोशल वर्क के सिलेबस को फिर से बनाने का निर्देश दिया गया। प्रतिभागियों ने व्यक्तिगत रूप से और फिर समूहों में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और डिग्री स्तर पर पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए सहभागी चर्चा के बाद काम किया। डॉ. वेंकट पुल्ला ने सभी प्रस्तुतियों से निष्कर्ष निकालकर कार्यक्रम का समापन किया। डॉ. वेंकट पुल्ला ने कहा कि समाज में जा रहे हैं कोर्स में उद्योग के अपेक्षित बदलाव होने और इन पाठ्यक्रमों में बदलाव से छात्रों को लिए तैयार होना चाहिए।

**यू.जी.सी. एच.आर.डी.सी. जे.एन.यू. के निदेशक प्रो. राम नाथ झा** समापन सत्र में मुख्य अतिथि थे। उन्होंने राष्ट्रीय कार्यशाला के आयोजन के तरीके पर अपार प्रसन्नता व्यक्त की और समय के कार्यक्रम की आवश्यकता के बारे में वाक्पटु थे। बाद में उन्होंने प्रतिभागियों को भागीदारी प्रमाण पत्र प्रदान किए।

## अमृता विश्व विद्यापीठम कोयंबटूर 25-26 जुलाई

**प्रो.एस. महादेवन, प्रिंसिपल, अमृता स्कूल ऑफ फिजिकल साइंसेज, कोयंबटूर परिसर** ने ग्रामीण प्रबंधन और ग्रामीण व्यस्तता पर राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन किया। उन्होंने ऐसे उद्योग-तैयार पाठ्यक्रम के महत्व पर जोर दिया जिससे छात्र लाभान्वित हो सकें। प्रो. महादेवन ने ऐसी महत्वपूर्ण कार्यशाला आयोजित करने पर प्रसन्नता व्यक्त की जिसमें संकाय विचार-मंथन करेंगे और समाज और राष्ट्रीय ग्रामीण विकास की भलाई के लिए पाठ्यचर्या सुधार लाएंगे।

डॉ. वेंकट पुल्ला ने कौशल, मनोवृत्ति और ज्ञान पर मजबूत महत्व वाले विश्वविद्यालयों के समामेलन की आवश्यकता पर बल देते हुए आने वाले दिनों में विश्वविद्यालयों के वर्गीकरण की चेतावनी दी। यह कहते हुए कि शिक्षण विधियों में अधिक दक्षताओं, अनुपालन, सी.एस.आर. को पाठ्यचर्या विकास में शामिल करने की आवश्यकता है, उन्होंने छात्रों को अधिक सक्षम बनाने के लिए छात्र-केंद्रित पाठ्यक्रम का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि शिक्षा की एकमात्र जिम्मेदारी अधिक गुणवत्तापूर्ण जनशक्ति तैयार करना है। अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने इस मौके पर इस कार्यशाला की आवश्यकता के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा, "शिक्षा को आज छात्र समुदाय की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक अलग दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है, अनुभवात्मक शिक्षा को बढ़ावा देना और छात्रों के सही समूह से जुड़ना। उन्होंने कहा कि अनुसंधान को बढ़ावा देने और बाजार विश्लेषण को तेज करने की जरूरत है। देश भर में आयोजित होने वाली इस तरह की कार्यशालाएं शिक्षण की एक पद्धति का निर्माण करेंगी। उन्होंने कहा कि इस तरह के विचार-मंथन सत्र वास्तव में विषय की बेहतरी के लिए संकाय सहित अधिक वेटेज जोड़ेंगे।

इस कार्यशाला में सामाजिक कार्य और प्रबंधन से देशभर के 30 चुनिंदा संकाय ने हिस्सा लिया। प्रतिभागियों ने अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा निर्देशित समूहों में काम किया और अपनी रणनीति और विचार प्रस्तुत किए। प्रतिभागियों द्वारा लिखे गए बिंदुओं पर समूहों में चर्चा की गई। भागीदारी चर्चा से निकाले गए प्रमुख बिंदु थे ग्रामीण सामुदायिक व्यस्तता, सामुदायिक संगठन, अनुसंधान पद्धति, ग्रामीण प्रौद्योगिकी, कृषि बाजार को समझना, उद्यमिता, किसान उत्पादक संगठन, स्वच्छता, अपशिष्ट प्रबंधन और ग्रामीण विपणन।

डॉ. वेंकट पुल्ला ने सामाजिक कार्य और ग्रामीण प्रबंधन पर समूहों के निष्कर्षों और परिणामों का मिलान करके सत्र का समापन किया। सामाजिक कार्य और ग्रामीण प्रबंधन के लिए सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और डिग्री स्तर के लिए अलग-अलग इनपुट दिए गए थे।

राष्ट्रीय कार्यशाला के अंत में प्रतिभागिता प्रमाण पत्र प्रस्तुत किए गए।

---

## उस्मानिया विश्वविद्यालय
## हैदराबाद 14-15 जुलाई

राष्ट्रीय कार्यशाला के प्रमुख परिणाम यह थे कि प्रतिभागियों ने संशोधित किया, मूल्य किया इसके अलावा, बी.बी.ए. ग्रामीण प्रबंधन के लिए पाठ्यक्रम को बदल दिया और अद्यतन किया। उन्होंने अपने संस्थानों में ग्रामीण उद्यमिता विकास प्रकोष्ठों का गठन किया। अनुभव को छात्रों के साथ साझा करने के लिए एक केसलेट के रूप में परिवर्तित किया जा रहा है।

**प्रो. पी. अप्पा राव**, पूर्व कुलपति, हैदराबाद विश्वविद्यालय ने उद्घाटन भाषण दिया। उन्होंने कहा कि जिम्मेदारी संतुलन के साथ तंग रस्सी पर चलना है। अनदेखी चुनौतियाँ हर बार सामने आती हैं। जिम्मेदार शिक्षक ही राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। सिस्टम को कैसे चलाया जाए यह एक जिम्मेदार चुनौती है जिस पर काम किया जाना है। उन्होंने कहा कि वर्तमान राष्ट्रीय कार्यशाला एक गेम चेंजर साबित होगी यदि शैक्षणिक नेता सामाजिक कार्य और ग्रामीण प्रबंधन में पाठ्यचर्या सुधारों में मार्ग का नेतृत्व कर सकते हैं। हमें उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए एक तंत्र खोजने की जरूरत है।

अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्देश्यों की शुरुआत की, जबकि डॉ. वेंकट पुल्ला ने विचार-विमर्श और समूह चर्चा का नेतृत्व किया। **डॉ. सुदर्शन, यू.एस.ए.** ने पुरानी शिक्षा नीति और एन.ई.पी. 2020 में किए गए परिवर्तनों पर विचार-विमर्श किया। प्रतिभागियों को कार्यक्रम में कई निकास और प्रवेश विकल्पों को समझने का सुझाव दिया गया था। शिक्षा के उद्देश्यों को स्पष्ट किया गया था और उन गतिविधियों को सुव्यवस्थित करने का भी सुझाव दिया गया था जो बेहतर शिक्षा और कौशल विकास की ओर ले जाती हैं। एक अच्छी तरह से डिजाइन किए गए कार्यक्रम को परिणाम के आधार पर आसानी से निष्पादित और मूल्यांकन किया जा सकता है।

सिद्धांत और कक्षा सत्र से ज्यादा इस बात पर विचार किया गया कि इंटर्नशिप के जरिए अनुभव बांटने और कौशल विकास पर जोर देने की जरूरत है। भौगोलिक क्षेत्र, जलवायु परिस्थितियों और उपलब्ध संसाधनों के आधार पर बी.ओ.एस. प्रमुखों को दिन के अंत तक सामाजिक कार्य, ग्रामीण प्रबंधन के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम तैयार करने का सुझाव दिया गया था। विशेषज्ञताओं के अनुसार समूहों का गठन किया गया - सामाजिक कार्य, प्रबंधन और वाणिज्य। समूहों को मंथन करने और एन.ई.पी. को सफल बनाने और छात्रों को सही रास्ता दिखाने के सर्वोत्तम समाधान के साथ आने के लिए कहा गया था। डॉ. वेंकट पुल्ला ने बाद में समूहों के इनपुट का मिलान किया। दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के अंत में शिक्षकों को प्रतिभागिता प्रमाण पत्र दिए गए।

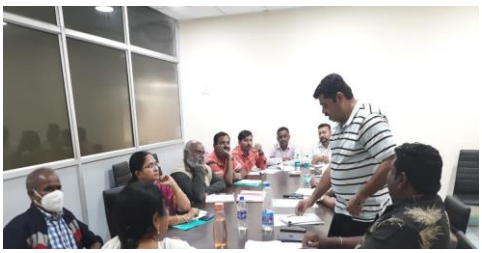

# संकाय विकास कार्यक्रम

## *11 से 16 जुलाई 2022 तक "शैक्षणिक नेतृत्व के लिए प्रबंधन विकास कार्यक्रम"*

दो संकाय विकास कार्यक्रम - **शैक्षणिक नेतृत्व के लिए प्रबंधन विकास कार्यक्रम** आई.सी.एस.एस.आर. एस.आर.सी. उस्मानिया विश्वविद्यालय में 11-16 जुलाई 2022 तक अलग-अलग बैचों में आयोजित किए गए। एफ.डी.पी. में आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और महाराष्ट्र के सरकारी कॉलेजों के प्राचार्यों की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखी गई। एक महत्वपूर्ण परिणाम यह हुआ कि कई प्रधानाध्यापकों ने अपने संबंधित संस्थानों को गतिविधियों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए ईमानदारी से और व्यवस्थित प्रयास करने और कॉलेज में शैक्षणिक, सह-पाठ्यक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों जैसे कार्यान्वयन में उत्कृष्टता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक दस्तावेजों को बनाए रखने के आदेश जारी किए हैं। ग्रीन ऑडिट, एन.ई.पी. 2020 के कार्यान्वयन की तैयारी, और एन.ए.ए.सी. मान्यता के लिए तैयार होना।

***हैदराबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. पी. अप्पा राव द्वारा एफ.डी.पी. का उद्घाटन***

हैदराबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. पी. अप्पा राव द्वारा एफ.डी.पी. का उद्घाटन करते हुए प्रो. अप्पा राव ने कहा, "एन.ए.ए.सी. को अंक प्राप्त करने की आवश्यकता है। एन.ए.ए.सी. के लिए काम करने का एक सीधा तरीका है। हम अपशिष्ट प्रबंधन पर काम कर सकते हैं और एक मॉडल बन सकते हैं। यह छात्रों में सर्वोत्तम प्रथाओं को प्रोत्साहित और विकसित करेगा। इस प्रकार के बीजों को स्कूल या एच.ई.आई. स्तर पर बोया जा सकता है। ये गतिविधियां हमें स्वास्थ्य समाधान और संतुष्टि प्रदान करेंगी।"

डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने अनुसंधान करने वाले और प्रस्तावों के साथ अनुसंधान में भाग लेने वाले संकाय सदस्यों के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने आवश्यक शोध की गुणवत्ता पर जोर दिया। प्रस्तावों की स्थिति पर भी चर्चा की गई। उन्होंने दिशा-निर्देश दिए जिससे प्रभावी और योगदान देने वाला शोध किया जा सके। सत्रों ने शैक्षणिक नेतृत्व के कार्यान्वयन को प्रेरित किया क्योंकि अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने व्यावहारिक मूल्यों और नवीन वैज्ञानिक मूल्यों के साथ अनुसंधान करने के महत्व को समझाया।

**श्रीमती जे पद्मा**, एम.जी.एन.सी.आर.ई. संसाधन व्यक्ति ने प्रतिभागियों को सत्र से परिचित कराया। सत्र प्रतिभागियों में मित्रता और नेतृत्व गुणों को बाहर लाने के बारे में था। प्रतिभागियों ने कार्यक्रम से अपेक्षाओं को साझा किया। प्रतिभागियों को शैक्षणिक नेतृत्व के क्या, क्यों, कहां, कैसे और ग्रामीण और शहरी परिप्रेक्ष्य के माध्यम से लिया गया। उन्होंने कुछ परियोजनाओं को साझा किया जो स्वच्छता, सामाजिक उद्यमिता और सामुदायिक व्यस्तता के क्षेत्रों में की जा रही हैं। श्रीमती पद्मा ने संक्षेप में कहा कि इस तरह की गतिविधियों का अनुभवात्मक शिक्षा का पहलू छात्रों में कौशल का निर्माण करने और छात्रों में सामुदायिक विकास के प्रति बेहतर दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करेगा।

**प्रो. सुदर्शन (यू.एस.ए.)** ने शैक्षणिक नेतृत्व के प्रबंधकीय पहलुओं पर बात की। "उच्चतर शिक्षा का एक उद्देश्य है - यह अप्रासंगिक है कि डिग्री अमेरिका की है या भारत की। प्रभाव सामुदायिक व्यस्तता के साथ आता है- एक सचेत निर्णय। शैक्षणिक कार्य सम्मान को आकर्षित करते हैं। मूल्यों के साथ शैक्षणिक कार्य के साथ नेतृत्व कार्यान्वयन; और मूल्य प्रणाली पूरे भारत में सम्मान प्राप्त करती है। "सम्मान कुछ विशेषाधिकारों के रूप में होता है। शिक्षा बीजा की कोई सीमा नहीं है। बौद्धिक गतिविधि में प्रायोजन का पक्ष होता है। यह कोई लाभ का व्यवसाय नहीं है, लेकिन प्रभाव समाज में योगदान पर पड़ता है," उन्होंने कहा। डॉ. राजशेखर ने विश्वविद्यालयों के मूल्यांकन के आधार के रूप में सेवा

करने के लिए सात मानदंडों पर चर्चा की। 1.पाठ्यचर्या पहलू 2.शिक्षण - सीखना और मूल्यांकन 3.अनुसंधान, परामर्श और विस्तार 4.बुनियादी ढांचा और सीखने के संसाधन 5.छात्र सहायता और प्रगति 6.शासन और नेतृत्व और 7. अभिनव अभ्यास।

**डॉ. सी उमामहेश्वर राव, आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त)** ने अपने सत्र में शैक्षणिक नेतृत्व के महत्व को उदाहरणों के साथ समझाया। उन्होंने उपाख्यान दिए और सत्र को शैक्षणिक नेतृत्व कार्यान्वयन की भावना लाने के लिए इंटरैक्टिव बनाया। उन्होंने छात्रों को सांस्कृतिक मूल्य प्रदान करने पर जोर दिया।

**डॉ. के. एन. रेखा,** एम.जी.एन.सी.आर.ई. संसाधन व्यक्ति ने समस्या समाधान और बातचीत कौशल का एक गतिविधि सत्र आयोजित किया। प्रतिभागियों द्वारा सीखे गए ज्ञान को उनके सीखने के लॉग में दर्ज किया गया था। प्रतिभागियों ने सुविधा कौशल के कार्यान्वयन पहलुओं के साथ आए हैं। प्रो. वाई नरसिम्हुलु, निदेशक एच.आर.डी.सी., हैदराबाद विश्वविद्यालय आत्म-प्रेरणा के प्रमुख सिद्धांतों के बारे में वाक्पटु थे। उन्होंने कहा, "नेतृत्व जीवन का एक तरीका होना चाहिए। जन्म से नेतृत्व होता है। हम भारतीयों को याद रहेगा कि हमारे पास एक महान नेता महात्मा गांधी हैं। हमने उसे नहीं देखा है। आप जो उपदेश देते हैं, उसका अभ्यास महात्मा गांधी ने किया है।" वेलनेस कोच और लीडरशिप बिल्डर डॉ. विवेक मोदी ने नेताओं के लिए आवश्यक जरूरतों और उपायों के लिए एक गहन संवाद सत्र आयोजित किया। उन्होंने योगदान देने वाली टीम के लिए अग्रणी नेता के लिए आगे बढ़ने पर ध्यान केंद्रित किया।

एफ.डी.पी. के हिस्से के रूप में राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंधन अकादमी (एन.ए.ए.आर.एम.), भा.कृ.अनु.प., हैदराबाद के लिए एक फील्ड ट्रिप का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों ने सत्रों में भाग लिया और एन.ए.ए.आर.एम. की गतिविधियों और रोजगार और उद्यमिता गतिविधियों से जुड़ाव के बारे में सीखा। एन.ई.पी. 2020 पर **प्रधान वैज्ञानिक डॉ. थम्मी राजू** ने चर्चा की। कृषि पाठ्यक्रमों और एम.ओ.ओ.सी.एस. में संभावनाओं पर एक प्रस्तुति पर बड़े पैमाने पर चर्चा की गई। प्रतिभागियों को जल संचयन संयंत्र, वृक्षारोपण, और खाद और स्थिरता गतिविधियों सहित दस एकड़ परिसर के दौरे के लिए ले जाया गया। **डॉ. सेंथिल विनयगम, प्रधान वैज्ञानिक** द्वारा उद्यमिता, कौशल विकास और स्टार्ट अप अभिविन्यास की पेशकश की गई थी। नार्म के **सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी डॉ. अनीजा** ने दौरे का समन्वयन किया।

6-दिवसीय एफ.डी.पी. का समापन सत्र और भागीदारी प्रमाणपत्रों की प्रस्तुति के साथ हुआ। सत्र प्रतिभागियों के लिए एक संदेश और अग्रसर रास्ता था।

---

## आगामी

**छह-दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम**

**संस्थागत सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए मार्गदर्शन करना और सामुदायिक व्यस्तता के लिए सुविधा**

**विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और उच्चतर शिक्षा संस्थानों के संकाय के लिए यू.जी.सी. -एच.आर.डी.सी., देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर और यू.जी.सी. - एच.आर.डी.सी. रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर**

***के सहयोग से विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और उच्चतर शिक्षा संस्थानों के संकाय के लिए***

***संस्थागत नेता बनने के लिए खुद को कार्यप्रणाली, उपकरण और तकनीकों से लैस करने का संकाय के लिए विशेष अवसर***

**1 – 6 अगस्त 2022**

एफ.डी.पी. के बारे में हैं -

i. **परियोजना प्रबंधन:** किसी भी कार्य को एक निश्चित समय में और उपलब्ध बजट के साथ पूरा करने के लिए
ii. **सामुदायिक व्यस्तता:** समुदाय की महसूस की गई जरूरतों को पूरा करने के लिए जो शिक्षा संस्थान की क्षमता के भीतर हैं
iii. **कॉर्पोरेट/संस्थागत सामाजिक उत्तरदायित्व:** शिक्षा संस्थान को बढ़ावा देने के लिए पड़ोसियों के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व जो स्थान, भूजल प्रदान करते हैं, सेवाएं और मानव शक्ति प्रदान करते हैं, कचरे का प्रबंधन करते हैं, सड़क और परिवहन प्रदान करते हैं
iv. **सुविधा:** सर्वसम्मति बनाने और संसाधनों को साझा करके समुदायों के साथ काम करने पर उन्मुख होने के लिए
v. **मार्गदर्शन:** उच्चतर शिक्षा संस्थानों के सामुदायिक व्यस्तता के लिए उन्मुखीकरण, निरंतर हाथ पकड़ना और मार्गदर्शन करना।

---

## संस्थागत दौरे

## उच्चतर शिक्षा संस्थानों में स्थिरता पहलुओं का कार्यान्वयन - संस्थागत दौरे

जल संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन और हरियाली और वृक्षारोपण जैसे स्थायी मानकों को लागू करने के लिए एम.जी.एन.सी.आर.ई. परियोजना सहयोगी देश भर में उच्चतर शिक्षा संस्थानों का दौरा कर रहे हैं।

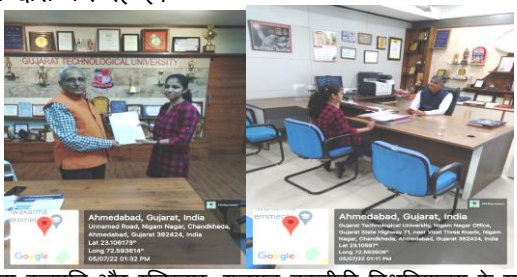


माननीय कुलपति और रजिस्ट्रार, गुजरात तकनीकी विश्वविद्यालय के साथ

सिनर्जी इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एवं टेक्नोलॉजी, ढेंकनाल — एन.आई.टी. रायपुर छत्तीसगढ़

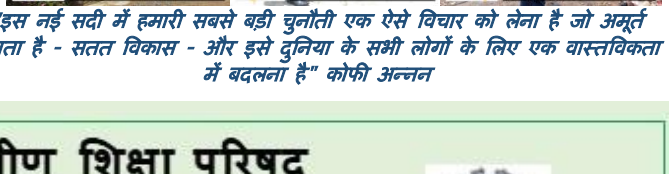

*"इस नई सदी में हमारी सबसे बड़ी चुनौती एक ऐसे विचार को लेना है जो अमूर्त लगता है - सतत विकास - और इसे दुनिया के सभी लोगों के लिए एक वास्तविकता में बदलना है" कोफी अन्नन*


# महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद्

**उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार**

# 5-1-174, शक्कर भवन, फतेह मैदान रोड, बशीरबाघ, हैदराबाद, तेलंगाना - 500004

दूरभाष: 040-23212120, फैक्स: 040-23212114, ई-मेल: admin@mgncre.in, वेबसाइट: www.mgncre.org

संपादक: डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार, अध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई., डॉ.डी.एन.दास, सहायक निदेशक, अनसूया.वी, संपादक

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद् (एम.जी.एन.सी.आर.ई.) की ओर से डॉ. डब्ल्यू.जी. प्रसन्न कुमार, अध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा प्रकाशित और मुद्रित

RNI NO: TELENG/2021/81111